प्रातःक्लास 21.3.68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद हैं?

ओमशांति। बाप समझाते हैं मैं आत्मा शांत स्वरूप हूं। तुम बच्चों को यह नालेज अच्छी तरह से मिली है। हम आत्माएं मूलवतन के रहने वाली हैं। उनको ही शांतिधाम कहा जाता है। यहां आकर पार्ट बजाया है। अभी बाप कहते हैं पवित्र बनो ,वापस जाना है। लिखा भी है कमल फूल समान पवित्र बनना है। उनका अर्थ भी बताया। फिर भी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। बच्चों को ही कहते हैं। बच्चे समझते हैं बाबा इसमें आकर हमको समझाते हैं। बच्चों को कहते हैं यह जो भी सारी दुनियां है यह सभी है ही गृहस्थ व्यवहार की। सभी को पार्ट बजाना है। अभी बाप कहते हैं पवित्र बनो। अपवित्र बनने की दरकार ही क्या है? जबकि बाप कहते हैं कमलफूल समान पवित्र बनो। गृहस्थ व्यवहार वालों को ही कहते हैं। बाकी कुमार–कुमारियां तो पवित्र ही रहती हैं ;परंतु बाप कहते हैं तुम जन्म जन्मांतर के पतित हो। मनुष्य सिर्फ इस जन्म के हिस्ट्री को जानते हैं। बताते हैं ;क्योंकि अंदर में खाता है हमने यह पाप किये हैं। हम बहुत पापात्मा हैं। बाप कहते हैं सभी मनुष्य मात्र महान पापात्मा हैं। इतने जन्म पापात्मा होकर रहे हो। तुम बच्चों को तो खास कहते हैं। शुरू से लेकर सबसे माया का पसारा होता है। तब से तुमने पाप शुरू किये हैं। जन्म जन्मांतर के पाप हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गए हो। यह है ही पापात्माओं की दुनियां। वह है पुण्यात्माओं की दुनियां। यह बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। कृष्ण भगवानुवाच तो लगता ही नहीं। वह न भगवान है, न बाप है फिर मानेंगे ही क्यों? बहुत हैं जो मानते नहीं हैं। गीतायें सुनाने वाले गृहस्थी पुरुष बहुत हैं। माताएं भी हैं जो बैठ गीता पढ़ती हैं। वास्तव में भार की है ही गीता। यह गीता शास्त्र आदि सभी भक्तिमार्ग में पढ़ते हैं। बाप ने समझाया है यह शास्त्र पढ़ना भक्ति मार्ग है। पढ़ते तो सभी हैं ना। यह भी अक्षर पढ़ते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो और देह के सभी सम्बंधों को छोड़ो। यह भी पढ़ता था ; परंतु समझता कुछ भी नहीं था। इसलिए कहा ही जाता है पत्थर बुद्धि। पारस बुद्धि और पत्थर बुद्धि में फर्क तो है ना। सतयुग में होते हैं पारस बुद्धि। सत के संग से तुम पारस बुद्धि बनते हो। अभी तुम सत्य अर्थात् बाप के संग में बैठे हो। नई दुनियां स्थापन होती है। बीज जब बोया जाता है तो पहले एक से शुरू होता है। प्रजापिता ब्रह्मा एक है। फिर है एडाप्ट ब्राह्मण कुल। मुखवंशावली। वहां ब्रह्मा तो है नहीं। भल अपन को ब्राह्मण कहलाते हैं ;पंरतु वह ब्राह्मण कुल कहाँ से पैदा हुआ जो ब्राह्मण कहलाते हैं। वह तो किसी मनुष्य का नाम कहेंगे। जैसे जैनी कुल फलाना कुल कहा जाता है ना। तो वह कोई सच्चे ब्राह्मण कुल नहीं ठहरे। इस समय तुम प्रजापिता ब्रह्मा के एडॉप्ट किये हुए ब्राह्मण। मुखवंशावली। इनका अर्थ भी कोई समझते नहीं है। तुम किसको एडाप्ट करते हो तो वह तुम्हारा बच्चा थोड़े ही है। फिर नाम बदलते हैं। तुम भी हो मुखवंशावली। तुम(तुम्हें) समझ मिली है बरोबर हम प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली हैं। ब्रह्मा को मुखवंशावली नहीं कहेंगे। ब्रह्मा को फिर रथ कहा जाता है। भागीरथ। भागीरथ कैसे होता है, क्या होता है, किसको पता नहीं। अनेक प्रकार के बैल आदि चित्र बनाते हैं। कितना श्रृंगारते हैं। जैसे वह घोड़े की सवारी दिखाते हैं। यह फिर बैल की सवारी दिखाते हैं। बैल भी कैसे2 बनाते हैं। जिसको जो आता है करते रहते हैं। अभी यह तो बच्चे जानते हैं कलियुग पुरानी दुनियां का विनाश होना ही है। मनुष्यों की बुद्धि में है कि जब कलियुग की आयु पूरी होगी तो विनाश होगा। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम तो जानते हो अभी यह पुरानी दुनियां का अंत है। स्कूल में प्लेन में फिर वह लोग दो गोले दिखाते हैं। यूरोप एशिया का अलग2 दिखाते हैं। अभी तुम समझते हो सृष्टि का गोला एक ही है। सारी धरती समुद्र पर खड़ी है। फिर कोई कहते पानी में बैल है। उनके सिंग पर सृष्टि खड़ी है। बैल ऐसे2 करते हैं तो अर्थक्वेक आदि होती है। क्या2 बातें लिख दी हैं। कहेंगे फलाने शास्त्र में यह लिखा हुआ है। फलाने में यह है। बाप तो कोई भी शास्त्रों पर रफर नहीं करते हैं। बाप तो कहते हैं यह भक्ति मार्ग का भूसा बद्धि से निकालो। यह भक्ति

मार्ग के शास्त्र हैं। उनका अभी नाम भी न लो। सुना(नो) नहीं। हियर नो ईविल.....। तुम समझते हो यह भक्ति दुर्गति के शास्त्र हैं। इसलिए इनका नाम भी न लो। ऐसा कहने से भी इस पर बिगरते हैं। कोई ठीक रीति समझ जाते हैं, कोई नहीं समझते हैं। जिनको समझने का होगा वही समझेगा। ढेर के ढेर मनुष्य हैं। तुम बड़ों2 नामी–ग्रामी से ओपनिंग आदि कराते हो कि कुछ समझे ;परंतु वह कब समझेंगे नहीं ;क्योंकि उन्हों की तो अभी राजधानी है ना। अपने सावरंटी पिछाड़ी ही बहुत लगे हुए हैं। उन्हों की बुद्धि में यह ठहर न सके। इसमें तो सभी कुछ भूलना होता है। फिर भी हो सकता है कोई निकल पड़े। जिनको बाप का परिचय मिले और समझ जाये कि अभी तो बाप को ही याद करना है। समझते हैं फिर भी कह देते हैं फुर्सत नहीं। तो समझा जाता है मुश्किल ठहर सकेंगे। दिनप्रतिदिन हंगामा बढ़ता जाता है। पाकिस्तान की लड़ाई, चीन की लड़ाई लगती तो फिर बुद्धि उस तरफ ही चली जाती है। तुमको तो पता है यह सभी छोटी2 लड़ाइयां हैं। जब विनाश होना है तो बहुत बड़ी लड़ाइयां लगेंगी। फिर यह राजधानी स्थापन हो जावेगी। इन बच्चों (ल0ना0) की भी डिनायस्टी थी ना। तो इसमें भी लिखना चाहिए सूर्यवंशी डिनायस्टी अथवा घराणा। इसमें डिनायस्टी अक्षर न है। यह भी भूल है। देवताओं का घराणा था। सिर्फ एक ही नाम देने से दूसरों का पता नहीं लगता है। इसलिए डिनायस्टी जरूर लिखना चाहिए। तुम घराणा स्थापन कर रहे हो। माला बनती है ना। अभी बच्चे एक चित्र ले आये हैं जिसमें दिखाया है राजाओं का ताज कैसे छीना जाता है। अभी इसमें तुम सिर्फ राजाओं को दिखाया है। प्रवृत्ति मार्ग कैसे समझा जावे? परस राजा की निकल जाती है तो रानी की भी निकल जाती है। इसलिए युगल दिखाना पड़े। ताज भी दोनों का गिरता है। सिर्फ राजाओं को थोड़े ही गिरता है। इसलिए महारानी को भी दिखाना चाहिए ; क्योंकि कब कोई मेल को समझ में आ जाता है तो उठ पड़ते हैं। कब फीमेल उठ पड़ती है। तो क्यों नहीं दोनों ही का चित्र हो। दोनों ही जो डबल सिरताज थे वह ही नीचे उतरे हैं। यह चित्र आदि सभी हैं ही मनुष्यों को समझाने लिए। जैसे छोटे बच्चे को सिखाया जाता है तो किताब में चित्र दिखाते हैं ना। उनको किताब यह आवेगा। फलाने किताब में हाथी था। उनमें यह था। अभी तुम जानते हो यह हमारा देवताओं का घराणा फिर से स्थापन होता है। तो दो(नों) का नाम लेना होता है। तो मातायें भी खुश होंगी। रानियों का भी इकट्ठा .... होना है। डिनायस्टी अक्षर भी लिखना पड़े। यह भी तुम जानते हो आठ जन्म राजा–रानी का। तो ऐसे2 बच्चों का खयालात चलना चाहिए। खास करके जो चित्र बनाने वाले हैं, अपनी बुद्धि से बनाते हैं ना। ऐसे भी नहीं यह चित्र सिर्फ पढ़ने से समझ जावेंगे। भल तुम सारी गली में यह चित्र लगा दो ;परंतु जब तुम समझाओ नहीं तब तक कुछ भी नहीं समझेंगे। यह समझेंगे ही ब्राह्मण बच्चे। जिनको सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का नालेज है। भल करके पढ़ते हैं। पवित्र बनो ,योगी बनो। सन्यासी किसको कहे भी ; परंतु ऐसे नहीं कहते हमेशा के लिए पवित्र बनो। ऐसे भी किसको कह न सके कि घर–बार छोड़ो। जिनको घर–बार से वैराग्य होता है वह जंगल में चले जाते हैं। तुम तो इस सारी दुनियां से वैराग्य दिलाते हो। इस दुनियां में अभी रहना नहीं है। यह छी2 दुनियां है। नया घर और पुराना घर भी समझाया जाता है। उनका है हद का वैराग्य, तुम्हारा है बेहद का वैराग्य। बाप को तो है ही प्रवृत्ति मार्ग। कितना बच्चे वाला बाप है। वह निराकार ,यह साकार। ब्रह्मा को तो जरूर सभी सम्भाल रखनी पड़े। बहुत बच्चेवाले ठहरे तो उनको क्या गृहस्थी कहेंगे? नहीं। गृहस्थी कहा जाता है उनको जो विकार में जाते हैं। सतयुग में तो पवित्र गृहस्थ आश्रम था। बाप ने पवित्र गृहस्थ धर्म रचा। फिर रावणराज्य में अपवित्र हुए हैं। फिर बाद में जो धर्म आते हैं अपने समय पर वह वृद्धि को पाते रहते हैं। यह वैरायटी धर्मों का झाड़ है ना। यह भी तुम समझते हो मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं। जनावर के आगे रत्न क्या रखेंगे? पत्थर बुद्धि आसुरी बुद्धि कुछ भी नहीं समझते। तुम म्यूजियम में कितना समझाते हो। कोई तो ऐसे ही चक्र लगा कर जाते हैं। कुछ भी समझ न सके। गीता पढ़े हुए होंगे

ते बुद्धि में कुछ बैठेगा। कहेंगे बरोबर यह तो गीता में भी है। देह सहित देह के सभी सम्बंधियों को छोड़ मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हो। यह गीता का ही अक्षर है। इसलिए बाप कहते हैं गीता पढ़ने वाले को टच हो सकता है। यह अक्षर याद आवेगा। बेहद का बाप कहते हैं देह के सर्व धर्म को त्याग अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह तो बिल्कुल एक्युरेट बात है। तमोप्रधान से जब सतोप्रधान बने तब ही वापस जा सके। यह मुख्य बात है घड़ी2 याद आना चाहिए। सतोप्रधान पावन बनने बिगर वापस शांतिधाम जा नहीं सकते। यह भी समझेंगे कौन? जो दुःखी होंगे। साहुकारों की बुद्धि में नहीं बैठेगा। यहां कब बड़े आदमी को देखा? उठावेंगे ही गरीब ;क्योंकि वह दुःखी हैं। गरीब को ही विश्व का मालिक बनाने लिए रास्ता बतावेंगे। तो खुश हो जावेंगे। बड़े मर्तबे वाले को यहां आकर बैठने में ही लज्जा आती है। बड़े2 मिनिस्टर्स आदि की बुद्धि में नहीं बैठेगा। प्रॉमिस भी देते हैं हम फलाने टाइम माउंट आबू में आकर समझेंगे। फिर आते ही नहीं भाग्य में न है तो माया प्रॉमिस भी भुला देती है। क्यों आकर तुम्हारा टाइम वेस्ट करे। माया वह करने नहीं देती। ड्रामा में ही नूंध ही ऐसा है।

तुमको पूछना चाहिए कब गीता पढ़ी? तुम किसकी पूजा करते हो? बाबा ने कह दिया है देवताओं के पुजारी हो, गीता पढ़ने वाला हो,उनको समझाओ। भक्ति मार्ग में कितना गायन ,पूजन चलता है। मिलता कुछ भी नहीं है। त्यौहार आदि सभी इस समय के हैं, जिनका गायन चला आता है। अर्थ कुछ नहीं समझते। कोई भी पावन नहीं बनते। रखड़ी का अर्थ भी समझ नहीं सकते हैं। तुम भी ब्राह्मण हो। वह है जिस्मानी ब्राह्मण, तुम हो रुहानी। तुम भी दान लेते हो। ब्राह्मण बन फिर ब्राह्मण से देवता बन जावेंगे। ब्राह्मण हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। ब्राह्मण चोटी कहा जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों ने ही ज्ञान लिया देवता बनने लिए। विराट रूप भी है ना। प्रजापिता ब्रह्मा भी अभी है। वह लोग मानते भी ब्रह्मा को हैं ;परंतु वह कब आया यह कुछ भी पता नहीं। अभी तुमको सब नालेज है। नब्ज देख समझाना होता है। बिच्छू होता है ना ,नरम चीज देख काटता है। तुमको भी समझाने की भिन्न2 युक्तियां मिलती हैं। पात्र देखकर दो तो तुम्हारा टाइम वेस्ट न होगा। कुपात्र को दे व्यर्थ न गंवाना चाहिए। नब्ज देखने की भी युक्ति चाहिए। दिन प्रतिदिन तुम्हारी मेहनत कम होती जावेगी। तुम समझ जावेंगे कौन उठाय सकेंगे वा नहीं। देह से तुमको पड़े(रे) जाना है। अशरीरी बनना है। अशरीरी होकर तुम किसको भी समझावेंगे तो वह अशरीरी शांत हो जावेगा। शांति तो सभी मांगते हैं। बोलो , अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। हम आत्मा हैं ही शांत देश के वासी। हम शरीर से अलग हो जाते हैं। तो शांति ही शांति है। तुम जानते हो हम शरीर से अलग हो जाने वाले हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो आटोमेटिकली तुम कर्मातीत अवस्था में जावेंगे। तुम यहां आये ही पार्ट बजाने। सबसे जास्ती तुमने पार्ट बजाया है। इसलिए तुम ही तमोप्रधान बने हो। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। भक्तिमार्ग में कब सतोप्रधान बनने लिए बतावेंगे ही नहीं। जो एवर सतोप्रधान हैं वही रास्ता बताते हैं। यहां तो सभी तमोप्रधान हैं। वह क्या रास्ता बतावेंगे? सतोप्रधान तो एक ही बाप है। वह कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। पहले2 आत्मा प्योर जाती है। उपर से जो नई आत्माएं आती हैं , प्योर होने कारण उन्हों का मान–मर्तबा होता है। फिर दिन प्रतिदिन ताकत कम हो जाती है। यह ड्रामा बना हुआ है। उनको भी अच्छी रीत समझना है। तुमको विचार–सागर–मंथन करने की आदत पड़ती रहेगी तो प्वाइंट बहुत आते रहेंगे। सिर्फ वाणी पर भी आधार न रखो। विचार–सागर–मंथन तो तुमको करना है। बाप को नहीं। यह बाबा भी विचार–सागर–मंथन करता है ना। तुम भी प्वाइंट निकाल सकते हो। यह है टावर ऑफ साइलेंस। टावर आफ प्योरिटी। आगे चलकर यहां कोई अपवित्र आय नहीं सकेंगें। ..... भी है ना इंद्र सभी का। वह समय आवेगा पतित को बैठने न देंगे। कहां पतित बगुला ,कहां

पावन हंस। इस सभा में पतित को आने अलो(अलाऊ) नहीं करेंगे। बाप का आर्डिनेंस है ना पवित्र बनो। जो पवित्र बनते हैं वही विश्व का मालिक बनते हैं। पवित्र नहीं बनते हैं तो विनाश को पाते हैं। यह है ईश्वरीय आर्डिनेंस। जो मानेगा उनको ही वर्षा मिलेगा। बाप कहते हैं कोई भी पतित न बने। फिर भी पतित बनते हैं तो आर्डिनेंस का उल्लंघन करते हैं। पत्थर बुद्धि मनुष्य हैं ना। यह सारी दुनियां ही जंगल है। शास्त्रों (में) फिर लिख दिया है सराप दिया तो पत्थर बन गया। पत्थर बुद्धि तो सभी बने हैं ना। श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो जैसे जंगली झाड़ हैं। वह जंगली कांटें बन जावेंगे। फूल बन न सकेंगे। बाप ने जो बातें समझाई हैं वह फिर भक्तिमार्ग में उलट–पुलट कर देते हैं। जंगली भी बनना ही है। बाप को आना ही है। अभी तुम फूल बन रहे हो। सतयुग में यह नालेज थोड़े ही रहेंगे। कुछ भी नहीं। यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है।

अभी तुम्हारी आत्मा में ज्ञान है। आत्मा कितनी छोटी है। उनमें 84जन्मों का पार्ट है। यह और कोई मनुष्य को पता नहीं है। आत्मा को भी जानना चाहिए ना। बोलो, आत्मा का दर्शन किया है।(?) अपना दर्शन नहीं किया है तो बाप का फिर कैसे होगा? आत्मा भी गुप्त है, परमात्मा भी गुप्त है। भक्तिमार्ग में भल दीदार होता है ;परंतु समझते कुछ भी नहीं। सन्यासियों से क्या मिलेगा? वह तो घर–बार ही छोड़ेंगे। उनका है ही हठयोग। फीमेल्स तो हठयोग कर न सके। आजकल तो बहुत सन्यासी कपड़ा पहन लेते हैं ;परंतु फिर भी पैदा तो विकार से ही होते हैं ना। ऐसे बहुत हैं जो सारी आयु भी पवित्र रहते हैं। विलायत में भी ऐसे बहुत पवित्र रहते हैं। फिर जब बूढ़े होते हैं तो सम्भाल के लिए कम्पेनियन बना लेते हैं। फिर मि(ल)कीयत कुछ चैरिटी में ,कुछ सम्भालने वाली को देकर जाते हैं। वह भी सन्यासी ठहरे ना। शहर में रहते सभी कुछ करते हैं। किसम2 के मठपंथ हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। रचयिता और रचना के आदि,मध्य,अंत को भी तुम जानते हो। यह हार–जीत का खेल कैसे है। झाड़ की वृद्धि कैसे होती है यह तुम्हारी बुद्धि में है। इस्लामी, बौद्धी भी पीछे आते हैं। पहले2 है डीटी डिनायस्टी। अच्छा , इस्लामी आया। उनको 2500वर्ष हुए। उनसे पहले बाकी सूर्यवंशी–चंद्रवंशी रहे। आधा में वह। कहते हैं ना आधा में जाम, आधा में रईयत। वह तो फिर भी विश्व के मालिक बनते हैं ना। वह है पवित्र डिनायस्अी। वह अपवित्र। तुमको सारा राज समझाया जाता है यह दुनियां का चक्र कैसे फिरता है। बाप ने आगे भी कल्प वृक्ष की नालेज दी थी। अभी भी दे रहे हैं। कल्प2 देते रहेंगे। हार–जीत भी तुम्हारी होती है। तुम ही पहले2 आते हो। तुमको ही नई दुनियां का मालिक बनाता हूं। इसलिए पुरुषोत्तम युग का किसको भी पता नहीं है। बिल्कुल ही घोर अंधियारा है। भक्ति है ही घोर अंधियारा। ज्ञान सूर्य प्रकटा अज्ञान अंधेर विनाश। आधा कल्प है अंधियारा, आधा कल्प है सोझरा। बाप प्रैक्टिकल में सिद्ध कर बतलाते हैं। फिर वह कहानी बन जाती है। यह ही सत्यनारायण की कथा है। अमरकथा, तीजरी की कथा है। साधू–संत आदि शास्त्र पढ़ने वाले अर्थ बता न सकें। अमरकथा अभी तुम बच्चों को बाप सुना रहे हैं। वह है अमरकथा। यह है मृत्युलोक। कितनी बातें समझाई जाती हैं। इसमें भी बड़ी बुद्धि चाहिए। अच्छा, आत(ज) भोग है।

यह भोग आदि की बातें बिल्कुल अलग हैं। यह भी एक रसम–रिवाज है। इनमें कुछ रखा न है। तुमको तो बाप समझाते हैं यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी कैस रिपीट होती है। पहले2 डीटी डिनायस्टी थी ,वह आधा कल्प चली। फिर झाड़ में एड होते गए। मनुष्य सृष्टि के झाड़ की आयु भी बड़ी होनी चाहिए। आयु है ही 5000वर्ष। लाखों वर्ष तो हो न सके। झाड़ इतना बड़ा थोड़े ही हो सकता है। लाखों वर्ष में कितना बड़ा झाड़ हो जाये। इनकी भेंट बड़ के झाड़ से की जाती है। उनका भी फाउंडेशन नहीं है। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। यह भी ऐसे है। थुर है नहीं। बाकी कितने डार–डारियां आदि हैं। कोई बड़े ,कोई छोटे वंडर हैं ना। अच्छा ,मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग। रुहानी बच्चों को रुहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। ओमशांति।